मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख सलंग अंक १४८ अगस्त-२०१९

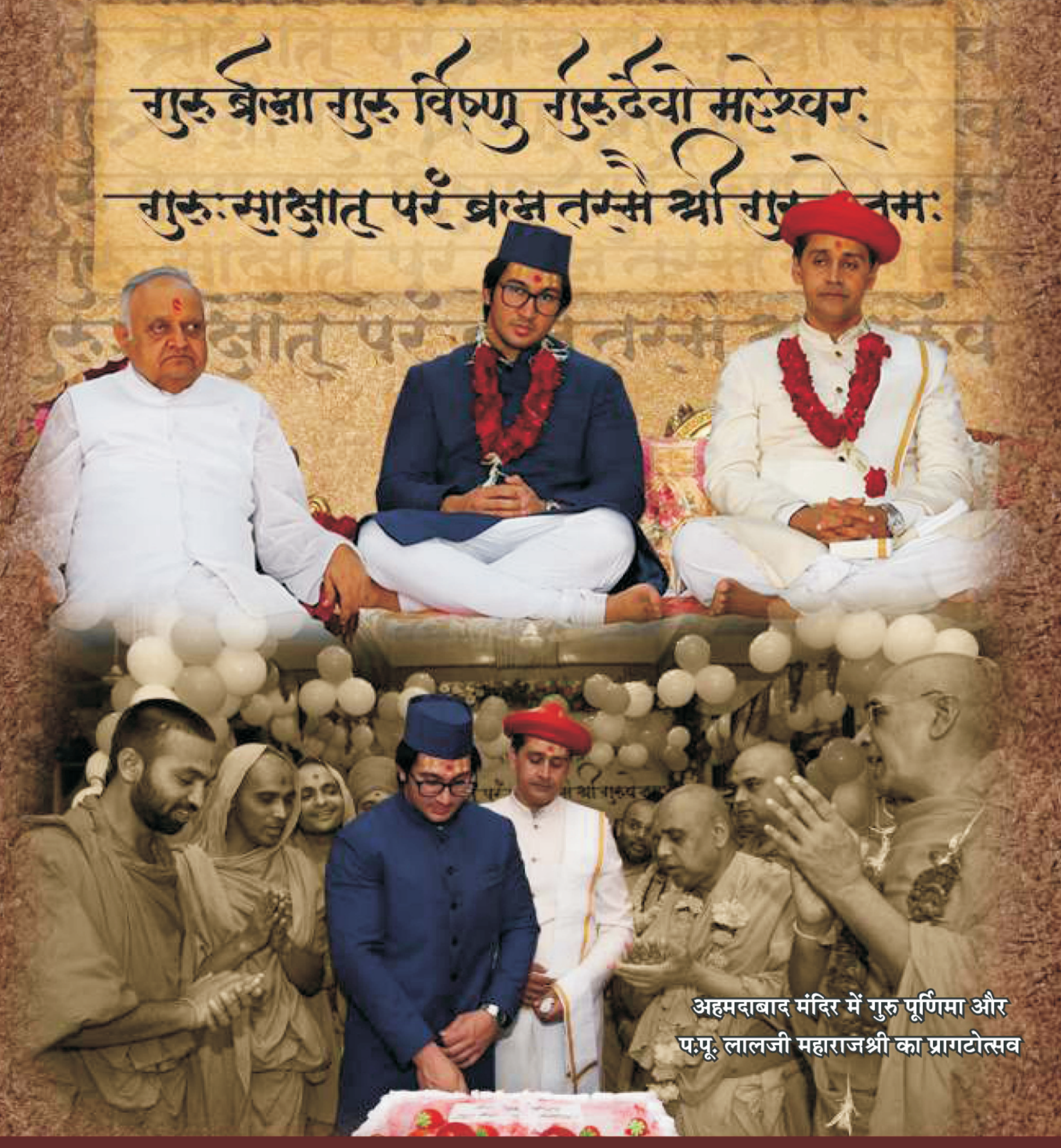

अहमदाबाद मंदिर में गुरु पूर्णिमा और
प.पू. लालजी महाराजश्री का प्रागटोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) कालुपुर मंदिर में गुरु पूर्णिमा महोत्सव तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के प्रागटोत्सव-महोत्सव के यजमान परिवार प.पू. महाराजश्री के पास से आशीर्वाद लेते हुए। (२) कालुपुर मंदिर के द्वारा कीर्तन और नित्य-नियम की नई एप को खोलते हुए प.पू. आचार्यमहाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री। (३) अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के समक्ष हिंडोलो तथा रथयात्रा का दर्शन। (४) ता. १४-७-१९ के दिन मालव में माणसा के आसपास-बगल गाँव शहर के युवकोने प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ सीधे बातें "फेस टु फेस" लालजी महाराजश्री के अन्तर्गत हुई। जिस में २२ जितने गाँवों के युवको ने भाग लिये और करियर सेमिनार में युवको को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किये। तथा वृक्षारोपण का कार्यक्रम किया गया। (५) कोलोनिया मंदिर में सूर्यनारायणदेव की प्रतिष्ठा करते प.पू. लालजी महाराजश्री।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १३ ● अंक : १४८

अगस्त-२०१९

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ८२३८००१६६६
मो. ९०९९०९८९६९
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	लालदास गोरा	०६
०४.	हे प्रभु जगत को प्रकाशित करे	०८
०५.	गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत वचन	१०
६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१३
०७.	सत्संग बालवाटिका	१५
०८.	भक्ति सुधा	१८
०९.	सत्संग समाचार	२३

अस्मदीयम्

हमारा भारत देश विश्व के आध्यात्मिक संस्कृति का देश माना जाता है। परम ब्रह्म परमात्मा ने प्रगट होने के लिये हमारे देश को पसंद किये है। ऋषि मुनियों और साधु संतो महात्माओ का यह देश है। हमारे देश में जन्म लेने के लिये तपस्या करना पड़ता है। ऐसा महान अपना देश है।

अभी हमारे देश के इसरो के वैज्ञानिको ने बहुत बडी सिद्धि प्राप्त की है। चन्द्रयान-२ का सफल लैंडिंग होते ही चन्द्रमां के दक्षिणी ध्रुव उतारने वाला पहला देश और चन्द्रमा की धरती पर पहुंचने वाला हमारा भारत देश चौथा देश होगा। वास्तव में समग्र देश वासियो को गौरव का अनुभव करना चाहिए। पृथ्वी से चन्द्रमा ३.८४४ लाख किलो मीटर दूर है। चन्द्रयान १९ अगस्त को चन्द्रमा की कक्षा में पहुंचेगा। जो ३१ अगस्त तक चन्द्रमा का चक्कर लगायेगा। यह अपनी सफल टेक्नोलोजी की बात है। आज से २०० वर्ष पहले का लिखा गया है। अपने वचनामृत में खगोल-भूगोल का वचनामृत आज के वैज्ञानिको को पढना चाहिए।

हम सभी भक्त गुरु पूर्णिमा महामहोत्सव भव्यता से मनाते है। सर्वोपरी श्रीहरि द्वारा प्रस्थापित सर्वोपरी श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान के वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की पूजा-अर्चना किये साथ ही साथ प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री का २२ वाँ जन्मोत्सव (एडवान्स) भी भव्यता से मनाया गया।

कालुपुर मंदिर में गुरु पूर्णिमा के अवसर जितना सत्संग समुदाय सभीने देखा वह वास्तव में न भूतो न भविष्यति जैसी है। कार्य दिवस था। ट्राफिक और पार्किंग की समस्या भी थी। फिर जनमेदिनी देखकर ऐसा अवश्य होता है कि इस सर्वोपरि देव गादी के लिये संत-हरिभक्तो के हृदय में कितना प्रेम और लगाव है। वह दिखाई देता है। ठाकुरजी का हिंडोला उत्सव चालु है। लगभग दिवालीतक उत्सवो का कार्यक्रम चलेगा। जिसका दर्शन सबको सुलभ होगा।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१९)

३	अमेरिका में सत्संग प्रचार के लिये विचरण।
७	श्री स्वामिनारायण मंदिर हंसविले (अमेरिका) में मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।
११-१५	श्री स्वामिनारायण मंदिर विल्सडनलेन लंडन पाटोत्सव कथा पारायण अवसर पर आगमन।
१६	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर गुरुपूर्णिमा के समस्त संत-हरिभक्तो द्वारा धर्मकुल-गुरु पूजा पूर्ण हुई।
२५-२९	श्री स्वामिनारायण मंदिर लंदन पाटोत्सव पर आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जुलाई-२०१९)

४	श्री स्वामिनारायण मंदिर वहेलाल में आगमन।
१४	श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा में आगमन।
१६	श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर गुरुपूर्णिमा के समस्त संत-हरिभक्तो द्वारा धर्मकुल-गुरु पूजा पूर्ण हुई।
१७-३१	श्री स्वामिनारायण मंदिर हेरो लंदन पाटोत्सव कथा अवसर और वहाँ से अमेरिका में सत्संग के प्रचार हेतु।

लालदास गोरा

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

हमारे सम्प्रदाय के इतिहास में भक्तमाला मुक्तो ने अहमदाबाद शहर के भक्तो में सत्संगी शिरोमणी हरिभक्त श्री लालदास गोरा की कथा वांचन श्रवण से हमको अधिक उपयोगी और लाभ देता है। क्योकि ऐसे श्रेष्ठ भक्त अन्य भक्तो के आदर्श होते है । ऐसे हरिभक्तो को भगवतप्राप्ति मे कैसे - कैसे विघ्न का सामना करना पडता है ? परीक्षा के समय में भी कैसी महिमा बनाये रखे, कैसा दिव्य भाव रखा कैसी सेवा और समर्पण समय वद्धता के साथ श्रीहरि के सेवा में पारंगत हुए। ऐसे हरिभक्तो के कुल पम्परा का दर्शन करना चाहिए। श्रीहरि के समकालीन अति धनवान में गणना की जाती है। ऐसे अहमदाबाद के नवावास के निवासी परम भक्त लालदास जोईताराम गोरा के जीवन के कई अवसर का यहाँ संशोधन किया गया । बारोट के पुस्तक के आधार पर उनकी उपजाति चार पीढ़ी के पूर्व महेता थी। उनके पूर्वज राजस्थान में भीनमाल के विशावणिक वैष्णव थे। संवत १७४० के वर्ष में दादा चाँदियादास महेता अहमदाबाद में असारवा में रहकर बही खाता लिखते थे । उनको पूर्वजो में लालदास के पिता जोईतादास उनके पिता चाँदियादास उनके पिता भीमदास उनके पिता गोरादास थे। गोराबापा की प्रसिद्धि के कारण उनके वंशावाली के पीछे ''गोरा'' उपनाम (जाति) प्रारम्भ हुई। एक दो पीढ़ी के बाद महेता मिटकर गोरा उपजाति हो गयी । इस कारण से परम दानवीर लालदास को गोरा कहते थे। लालदास गोरा का सम्बन्धअहमदाबाद के बादशाह के साथ अच्छा था । वे स्वभाव से सरल, प्रमाणिक और सत्यग्रही थे । इसका कारण बादशाह के वफादार कहे जाते थे । बादशाह दादा चाँदियादास से खुश होकर बहियल क्षेत्र में ८४ गाँव का कर पुरस्कार में दे दिये थए। उनका परिवार सन्मान के साथ साथ धनवान बना। दादा के कई परिवार बहियल गाँव में स्थायी निवास करते थे। लालदास के पिता जोईतादास गोरा असारवा में से ई.स. १८०५ के वर्ष में नवावास में घर बना लिये। लालदास का जन्म ई.स. १८३० के वर्ष में हुआ था। एक आदर्श परिवार का शुभ संस्कार वंश परम्परा के रुप में भक्तराज लालदास गोरा बचपन से प्राप्त कर लिये थे । प्रमाणिकता, सरलता, निमित्ता जैसे मूलभूत सद्‌गुण वंश परम्परा से मिला था। पूजा, पाठ, सत्संग, भजन में अभिरुचि के कारण शहर में कही पर भी ये सब का हो तो वहाँ पर अवश्य जाते थे। राजसत्ता और धन गर्व नही था। ऐसे में एकबार आस्टोडिया क्षेत्र में अंबाबेन के घर उद्धव सम्प्रदाय के प्रवर्तक सद्‌गुरु रामानंद स्वामी आये थे । स्वामीजी का दर्शन और वचन सुनकर उद्धव सप्रदाय की शरणागति स्वीकार करके सत्संगी हो गये । जितने समय रामानंद शहर में रहते तब तक सब कार्य पूर्ण करके सत्संग में अवश्य आते थे। आश्चर्य की बात तो यह है कि लालदास गोरा धनवान व्यक्तियो में थे । स्वामी जानते थे कि ये खानदानी धनवान है। इसके बाद भी रामानंद स्वामी ने कभी भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उनसे धन की माँग नही किये। लालदास गोरा को विशेष स्नेह हुआ कि ऐसे निःस्पृही साधु पूरे संसार में नहीं है। उस समय में शहर में दामोदर भक्त, कुबेरदास स्वामीजी से परिचय

कराते के लालदास अधिक धनवान है । तब स्वामीजी उत्तर दिया था । ''मैं तो डूगडूगी बजाने वाला हूँ'' । ऐसा कहकर बात टाल देते थे । तब से रामानंद स्वामी के अनुगामी रुप में सर्वावतारी श्री सहजानंद स्वामी बने । उस समय रामानंद स्वामी के आश्रितो में कई मत-मतांतर उपस्थित हुए । उनमें से कई शिष्य सहजानंद स्वामी को स्वीकारे नहीं थे । कुछ गाँव के आश्रित विमुख हो गये थे । उसमें से अहमदाबाद के साधु रघुनाथदास प्रमुख थे । वे शहर के हरिभक्तो को विमुख करने के लिये आकाश-पाताल एक कर दिये थे । इसके बाद भी भक्तराज लालदास जोईतादास गोरा की रामानंद स्वामी की आज्ञा में अचल श्रद्धा -विश्वास होने से वे सहजानंद स्वामी के अनुवृत्ति में रहकर सत्संग में अडिग सेवा-सत्संग करते थे।

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने सम्प्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर अहमदाबाद में बनाकर धर्म भक्ति के पुत्र श्री नरनारायणदेव की स्थापना किये उस समय बड़ा उत्सव रखे थे । उद्धव संप्रदाय के समस्त त्यागी, गृही नरनारी भक्तो को बुलाये थे । तब श्रीहरि मुक्तानंद स्वामी आदि सद्‌गुरुओ को बुलाकर कहे कि श्री नरनारायणदेव को पधराये है । इस कारण से शहर के सभी ब्राह्मणो को भोजन कराना चाहिए बाद में आनंदानंद स्वामीने पूछा कि आप के तिजोरी में पैसा हो तो यहाँ के ब्राह्मणो को भोजन कराये । आनंदानंद स्वामी बोले कि हे प्रभु ! तिजोरी में अभी ब्राह्मणो को खिालने भर का धन नही है। तब महाराज बोले : कोई धनवान हरिभक्त दे ऐसा है कोई ? तब आनंदानंद स्वामी बोले, एक धनवास हरिभक्त लालदास गोरा है जो मंदिर के पास नवा वास में रहते है। वे काफी धनवान है । इतने में श्रीजी महाराजने लालदास गोरा को बुलाकर पूछे, कि आप के पास कितने रुपये है ? उन्होने कहा हमारे पास सात हजार रुपया है।

श्रीजीमहाराज पूछे कि ये रुपये हमें आप देगे ? लालदास बोले हाँ महाराज ! हम घर के सदस्यो से पूछकर आते है । यह कहकर घर जाकर बात किये । ये रुपया महाराजने हमे दिये है । अर्थात् महाराज का है । दे दीजिए । हम लोग तो रह लेगे । घर के सदस्यो से अनुमति लेकर तिजोरी में से सौ-सौ रुपये की थैली लेकर शेठ श्रीजी महाराज के चरणो में रख दिया । तब श्रीहरि सेठ पर अधिक खुश हुए । और तुरंत शहर के ब्राह्मणो को बुलाकर फाल्गुन सुद पंचमी के दिन शहर को आमंत्रित किये । शहर में चोरासी के दिन श्रीहरिने जेराम ब्रह्मचारी और नानाभाई महेता को पास बुलाकर हरिभक्तो में एकता लाये । और महाराज कांकरिया के पास नीचे तकिया-गद्दी डालकर बैठे थे । श्रीहरि के कोठारी प्रभाशंकर दवे और लाधा ठक्कर भेट को लेते थे । सभी हरिभक्तोने पूजा किया । लाधा ठक्कर ने पैसे गिन उसमे सात हजार का आधा था । इस प्रकार श्रीजी महाराजने सात हजार रुपया वापस किये । सात हजार का खर्च शहर में हुआ था । सम्प्रदाय के धनवान हरिभक्तो में अहमदाबाद के लालदास गोरा और बोटाद के भगा दोशी सत्संग के प्रसिद्ध व्यक्ति थे । लालदास गोरा को कोटि कोटि वंदन हो । लालदास गोरा के पुत्र मदनलाल हुए । उनके केशव गोरा हुए । वे लोग भी श्री नरनारायणदेव की खूब सेवा किये । कॉंकरिया तालाब के मंच के नीचे गद्दी तकिया लगाकर श्रीजी महाराज बिराजमान हुए । तब देश-देशान्तर के हरिभक्तोने पूजा करके सात हजार की भेट एकत्र किये थे । उस प्रसादी की जगह पर हमारे आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने बाल स्वरुप कष्टभंजनदेव की स्थापना किये थे । जो श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया रामबाग में स्थित है।

हे प्रभु जगत को प्रकाशित करे

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

अष्टपदीयम् योगानन्दमुनिकृतम्

जलधरसुन्दर मदनमनोहर हृदयतमोहर कृष्ण हरे ।
वृषकुलभुषण दलितविदूषण दिव्यविभूथण दिव्यगते ॥
जय जय जयकर दीनदयाकर जगतिदिवाकर दिव्यपते ॥१
निजजनरंजन भवभयभंजन मुनिनिरंजन भक्तरते ।
मुनिजनमंडन विषयविखंन खलजनदंडन दंडविधे ॥ जयजय..॥२
असुरनिकंदन सुरवृषनंदन चर्चितचंदन मुक्तमुने ।
भवजलतारण दोषनिवारण मंगलकारण मुक्तपते ॥ जयजय..॥३
सरसिजलोचन जनिमृतिमोचन रविशशिरोचन रागिरते ।
असुरविमोहन सुरसुखदोहन वारणरोहण शीघ्रगते ॥ जयजय..॥४
निजहितशासन शापविनाशन हयगरूडासन सादिवृते ।
दुर्गपुरासन भक्तनिवासन भुंजितकुवासना भक्तरते ॥ जयजय..॥५
रचितनिजावन भक्तविभाजन पंक्तसुपावन पुण्यपते ।
शंकुरु शंकर वैरिभयंकर धर्मधुंरधर योगिगते ॥ जयजय..॥६
खंडितचंडं पंडितमंडं जितपाखडं दंडभटम् ।
कंपितकालं वृषकुलपालं वरवनमालंपीतपटं ॥ जयजय..॥७
श्रितसुखकंदं बोधितमंदं सहजानंदं त्वधिभजे ।
कुरू तव दासं चरणनिवासं त्यक्तकुवासं योगमुनिम् ॥ जयजय..॥८

योगानंद मुनि अपने ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणो में प्रार्थना पूर्वक विनती और स्तुति करते कहते है । है भगवान आपका सभी जगत में जय जयकार होती है । संसार के जीव के हृदय में व्याप्त अज्ञन रुपी अंधकार को नाश करके ज्ञान रुपी प्रकाश को प्रकाशित करें । जिससे जीव अपने आत्मा का कल्याण कर सके । तथा विषयवासना का नाश कर सके । आपके दिव्य रुप को धारण कर सके । ऐसी कृपा करे । आप का दिव्य स्वरुप कैसा अद्भुत है । ऐसा इस अष्टक में वर्णन करते है । उसके अर्थ पर विचार करे ।

जलधरसुन्दर मदनमनोहर हृदयतमोहर कृष्ण हरे ।
वृषकुलभुषण दलितविदूषण दिव्यविभूथण दिव्यगते॥
जय जय जयकर दीनदयाकर जगतिदिवाकर दिव्यपते ॥१

श्री योगानन्द मुनिने स्वयं जिस दिव्य और अद्भुत रुप का नित्य दर्शन किये है । वह स्वरुप कैसा है उसका वर्णन करते है – जिनका मानव शरीर अषाढ मास के नये घिरे बादलो के समान श्याम सुन्दर है । जिस पर कामदेव का भी मन खिच जाये ऐसा रुप है । जीव के हृदय में आदि काल से व्याप्त में और मेरा रुप जो अज्ञान का नाश करे ऐसा है । जिनका नाम मार्कन्डेय महामुनिने श्रीकृष्ण रखे है । और श्रीहरि ऐसा दूसरा नाम भी है । धर्मदेव के कुलाभूषण भी है । धर्मदेव के कुलाभूषण भी है । अपने भक्तो के सभी दोषो को दूर करते है । जो हमेशा दिव्य वस्त्र और गहने पहनते है । आश्रित भक्तो को मोक्ष प्रदान करते है । जिसका सहारा प्राप्त होने से जीव का संसार में हर जगह पर जय जयकार होती है । दिव्यता के अधिपति है । दीन-असहाय के उपर करुणायुक्त दया करते है । ऐसे हमारे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का सभी जगह पर जय जयकार हो ।(१)

निजजनरंजन भवभयभंजन मुनिनिरंजन भक्तरते ।
मुनिजनमंडन विषयविखंन खलजनदंडन दंडविधे ॥ जयजय..॥२

आप के आश्रय में आये अपने भक्तो को सदैव आनन्दर देते है । जन्म-मृत्यु के भय का नाश करते है । सम्पूर्ण जगत को आनंद देते है । अपने भक्त जिसे अधिक प्रिय है । जो मौन व्रतधारी ऋषियो और तपस्वीयों तथा सत्पुरुषो का महात्म

गाते है । माया के पाँच विषय का खंडन करता है । आसुरी वृत्ति तथा पापियो को दंड देते है । किसी को कब कैसा दण्ड देना है उसका ध्यान देते है । जिसके सहारे होने से जीव का संसार में जय-जयकार होती है। पूरे संसार को ज्ञान रुपी दिव्य प्रकाश दिया था । दिव्यता के अधिपति है । गरीब असहाय पर करुणामयी दया करते है । ऐसे हमारे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का सभी जगह पर जय-जयकार हो ।(२)

असुरनिकंदन सुरवृषनंदन चर्चितचंदन मुक्तमुने ।
भवजलतारण दोषनिवारण मंगलकारण मुक्तपते ॥ जयजय..॥३

अधर्म का आचरण करने वाला अभोज्य का भोज्य करने वाला आसुरी प्रवृत्ति का विनाश करते है। सत्कर्म करने वाले और पुण्य वाले भक्तो की रक्षा करके परमानंद देते है। जिसके ललाट पर मुक्तानंद मुनि सुगंधीदार चंदन का लेप करते है । अर्चना करते है । जीवो को जन्म-मृत्यु रुपी भवसागर से पार करते है । श्रीहरि का आश्रय मिलने से सभी दोषो का निवारण हो जाता है। संसार के मंगल और श्रेय के कारण है। अनन्त अक्षर मुक्तो के पति है । जिसका सहारा मिलने से जीव का हर जगह जय जयकार होता है । पूरे संसार को ज्ञानरुपी प्रकाश देने वाले है । दिव्यता के मालिक है । गरीब और निर्बल के उपर करुणा करने वाले है । ऐसे मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का सभी जगह पर जय-जयकार हो ।(३)

सरसिजलोचन जनिमृतिमोचन रविशशिरोचन रागिरते ।
असुरविमोहन सुरसुखदोहन वारणरोहण शीघ्रगते ॥ जयजय..॥४

जो श्रीहरि मानवदेह धारण किये है । उनकी आँखे खिले करमल के पंखुडी जैसी है । आश्रितो को जन्म-मृत्यु रुप स्मृति से दूर करते है । संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य और चन्द्र को प्रकाश देते है । जो भगवान श्री नरनारायण के जन्मोत्सव के फुलोत्सव में अपने भक्तो के उपर गुलाल उडाने में रुचि रखते है। अज्ञानी असुरो में मोह पैंदा करते है । सतोगुणी को सुख देते है । स्वयं की प्यारी अश्व माणकी घोडी पर सवारी करते है। जो गति से चलने के लिये आदरी है । जिसके शरण में जाने से जीव का संसार में जय-जयकार होता है । पूरे संसार को ज्ञान रुपी प्रकाश से दिव्य बनाते है । दिव्यता के अधिपति है । गरीब और दुर्बल के उपर करुणा करना वाले है । ऐसे मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का सभी जगह पर जय-जयकार हो ।(४)

निजहितशासन शापविनाशन हयगरूडासन सादिवृते ।
दुर्गपुरासन भक्तनिवासन भुंजितकुवासना भक्तरते ॥ जयजय..॥५

अपने आश्रितो को भागवत धर्म में सदा स्थिर रखते है । भगवान श्री नरनारायणदेव आश्रम में दुर्वासा ऋषि से प्राप्त श्राप से छुडाते है । देशान्तर में विचरण करने के लिये गरुण जैसे गति वाले अपने अश्व माणकी घोडी पर बिराजते है । जिनकी भेष भूषा व्यवहार सरल है । जो गढपुर में निवास करते है । कभी कभार अपने प्रिय भक्तो के घर निवास करते है । आश्रितो के मन से कुवासनाका नाश करते है । अपने भक्तो की हाल-चाल जानने के लिये सदैव तत्पर रहते है । जिनका आश्रय मिलने से जीव की जय जयकार होती है । सम्पूर्ण संसार को ज्ञान रुपी दिव्य प्रकाश देते है । दिव्यता के अधिपति है । गरीब और दुर्बल के उपर करुणा करना वाले है । ऐसे मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का सभी जगह पर जय-जयकार हो । (५)

रचितनिजावन भक्तविभाजन पंक्तसुपावन पुण्यपते ।
शंकुरु शंकर वैरिभयंकर धर्मधुंरधर योगिगते ॥ जयजय..॥६

अपने आश्रित भक्तो की रक्षा के लिये अपने सम्प्रदाय के संविधान शिक्षापत्री की रचना किये है । भक्तो की रक्षा के लिये विभाग त्यागी गृहि बाईभाई का विभाग किये है।

(पेईज नं. १२)

गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मुरव से अमृत वचन

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अहमदाबाद कालुपुर मंदिर ता. १६-७-२०१९ : आप सभी लोग जहाँ कही पर बैठे हो, लेकिन सभी हमारे नजर में है ? कौन कहा से आया है ? उसका एक बार Scaning (बारीकी से देखना) करलूँ । यह देव है । देव का सानिध्य है । आचार्य पद की महिमा की बात हुई । यह किसी व्यक्तिगत मनुष्य के गौरव या अभिमान की बात नही है । यह आचार्य पद की बात है । और महाराज ने स्वयं स्थापित किये है । जिसे बचाकर रखना अपना कर्म है । और लालजी महाराज का है । इसमें आप सभी का सहयोग प्रेम और लगाव है।

मैं वीते दिन रात्रि १० बजे Land (प्लेन से नीचे उतरने के अर्थ में) आया । पौने ग्यारह बजे स्वा. बाग में खिचडी खाने के लिये आये । लेकिन लंदन से मात्र देश (नरनारायणदेव) के दर्शन हेतु End of the day गुरु पूर्णिमा की बात करे तो इससे (नरनारायणदेव) के सामने कोई नही है । आचार्य के महिमा की बात आये तो यह महिमा देव द्वारा है । संस्था भी देव द्वारा है । देव का होकर रहे । इससे अधिक कुछ कहने लायक नही है।

लालजी महाराज का जन्म दिन के अवसर पर ता. २७-७-२०१९ था लेकिन मनाया गया । अभी केक काटकर संतो के आग्रह से देव का प्रसाद समझकर हमने लालजी महाराज को खिलाया । लालजी महाराज बोले अति सुन्दर है । मैं लगभग खाता नही हूँ । मुझे भी अच्छा लगा । केक मीठा नही होता है । यह केक का मीठापन नही है । बल्कि देव का सानिध्य संतो हरिभक्तो की भावना से मीठापन आया है ? शाकोत्सव में कैसा स्वाद मिलता है ? कारण ? भगवान जहाँ है । वहाँ का रस अलग ही होता है। ये रस भगवान का होता है । कल ही मैं आया हूँ । अब लालजी महाराज तथा उनका परिवार विदेश जायेगा । Holiday (त्योहार-आराम या छुट्टी) मनाने नही जाते है । जाने का मात्र एक कारण विदेश और गाँव में हमारे हरिभक्त रहते है । सत्संग की जड हमारे गाँव ही है । आज तक गाँव सुरक्षित है । इन गाँवो के सहारे हम लोग है । राजस्थान के छोटे-बड़े लगभग हर गाँव में जा चुके है । अभी कुछ दिन पहले भगुजी के गाँव में वाली मंदिर तक पैदल यात्रा किये । क्या वहाँ आनंद था । पदार्थ या भौतिकता की बात नही है । सुविधा में मीठापन नही होता है । मीठापन भगवान का होता है । भगवान जहाँ मिले हो वहाँ आनंद ही आनंद होता है।

स्वामीजी बोले कि सफारी (टाटा सफारी गाडी) का प्रयोग क्यो करते है । क्या करु ? जो नही आता उसे नही सिखना है । रोटी और कढी में जो आनंद आता है । वह पीझा में नही है । जीवन में देव मिले है । वही सब कुछ है । तब तक हम लोग सुरक्षित है । आनंद की बात यह है कि अपने पास बड़ा Spectrum है । ये सामने बैठे है । वही व्यवस्था करते है । और करेगे भी । मैं पारदर्शिता में मानता हूँ । सादा में आनंद है । कीमती गाडियाँ प्रयोग करने का मन नही करता है । क्योकि हरिभक्तो के योगदान से यह गाडी चलती है । मैं ये नही चाहता कोई मुझे कहे मुफ्त की गाडी में टहलते है । देव का धन है । देव की पेटी में आपका एक-एक रुपया पसीने से आया है । जिस की कीमत नही लगायी जा सकती है।

महाराज के समय से हमारे और आप के पुरखोने इतिहास रचा है । उनसे जो हमे मिला है । किसी की ताकत नही है कि और किसी के पास है । यह बड़ी धरोहर है ।

लालजी महाराज बोले सभा हुई थी। इस कारण से उत्तर गुजरात के हरिभक्त चलकर आये थे। राजस्थान के कई भक्त मुंबई से आये थे। हर क्षेत्र में अपने हरिभक्त है। लोग तीर्थ में जाते है। सुविधापूर्ण तीर्थ खोजते है। सुविधा न मिलने पर आधी रात को फोन करते है कि अच्छी व्यवस्था करे। एकबार मैं पूछा आप गये किस लिये है ? तो बोले दर्शन करने के लिये। हम बोले जहाँ पर है वही पर बने रहिए। हम कही सुविधा माँगते है। हम कही पर सुविधा नही माँगते है। यहाँ आप का मन नही लग रहा होगा वहाँ सुविधा मागेगा। जहाँ मन लग जाये वह सुविधा कोई कारण नही होता है। यह अनुभव की बात है। सादेपन में सुख और आनंद है। अभी सुखपुर के शांतिभाई हमारे लिये चेन लाकर हमें पहनाये थे। मैं बोला में पहनता नही हूँ। आप की चेन प्रेम की प्रतीक है। अंततः महाराजने संतो-भक्तो को अपने प्रेम के धागे से जो बाँधरखा है। वह इतिहास हमें बचाना है। और इस कार्य में आगे बढना है।

अभी कुछ दिन पहले हम बिना बताये अपने ड्राईवर के साथ कुर्ता-धोती (सादा ड्रेस) में कंथारिया और समला नामक गाँव में गये थे। हरिभक्तो के बीच दोनो गाँवो में पौने-पौने घंटे बैठे। तो उन्हे भी आनंद आया थे तो हमारी तरह ही है। पूर्व में बताकर जाने पर स्वागत और लोगो में तनाव रहता है। बड़े लोगो से इतिहास जानने को मिला और आनंद भी आया था। कंथारिया प्रसादी मंदिर जर्जरित हो गया। हरिभक्तो की चिंता दूर करने के लिये हमने कहा कुछ भी करके मंदिर निर्माण करेगे। महाराज के इतिहास को खत्म नही होने देगे। समला गाँव में एक हरिभक्त बापू के घर वासुदेवप्रसादजी महाराज चार वर्ष के थे तब छः महिना तक रहे थे। कितना विश्वास होगा उस हरिभक्त को हमारे परिवार के उपर !

इस आशयवाला हरिभक्त प्रतीक आया। आईये भी आईये। हमारा छोटा सा बगीचा है। उसके पीछे एक मढी बनाये है। प्रतीक ने खूब श्रम किया है। आप का मूल गाँव कौन है ? ''जुनि सावर'' अमरेली जिला। हाँ तो बोलो देश कहाँ लगता है। लेकिन प्रेम तो है। हमे विस्तार का ज्ञान था। अधिक उडान से अच्छा है जमीन पर बने हे। इससे कही पर कोई हाथ पकडकर हटा नही सकता है। जीन पर रहना अच्छा लगता है। सब मिलाकर देव का होकर रहना चाहिए।

लालजी महाराज के जन्म दिने को मैं उनके साथ नही रहूँगा। क्योकि वह या तो यु.एस.ए. या यू.के. जायेगे मैं अपने परिवार के लोगो की चिंता नही करता हूँ। और आ जभी नही करता। सत्संग बाले विशाल परिवार के लिये वे हमेशा रहे है और रहेगे। शेष आप के घर का कोई प्रसंग को या बच्चे का जन्म दिन हो तो आप घर से बाहर जा सकते है ? मैं तो सुनता आया हूँ कि Sorry मैं आज नही आ पाऊँगा। आज तो यह है तो Anniversary (विवाह की वार्षिक तिथि) है मैं तो कहता हूँ कि सभी को सुख से रहने दो। लेकिन लालजी का जन्म दिवस कोई व्यक्तिगत व्यक्तिगत जन्म दिन नही है। देव के प्रांगण में मनाया गया। देव का आशीर्वाद मिलेगा देव की प्रार्थना करे देव का खून है। देव बल देते है। और विशेष बल प्रदान करे।

एक बात याद आयी। बड़े बापजी चले गये। नही तो अभी प्रत्यक्ष करा देता। बड़े बापजी एक दिन एक मूर्ति लेकर देवेन्द्रप्रसादजी दादा के पास गये। बोले, यह मूर्ति प्रसादी करके दे। देवेन्द्रप्रसादजी के दादाजी गुस्सा हो गये। यहाँ से बाहर जाओ। ''आप मूर्ति की प्रसादी कराने आये है। तुम्हारे में किसका खून है पता है न, नही मानते हो तो बापजी से पूछले। सत्य है। आज जिसे इस देव के आश्रय और सानिध्य की खुमारी हो। उसके जीवन में इससे अधिक दूसरी कोई प्राप्ति नही है। ये खुमारी मेरे में है। किसी को अच्छा लगे या खराब देव

की खुमारी हमारे में है। में देव का हूँ और जीवन भर रहुँगा। मेरी हर श्वास देव के लिये है। हमारा और तुम्हारा अस्तित्व देव के कारण है। हम एक सूखे पत्ते को भी नही हटा सकते है। ये प्रतिदिन गाते है। लेकिन कही-कही भूल जाते है। गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आज हम सब एकत्र हुए है। मैं हर जगह कहता हूँ कि मेरा कोई शिष्य नही है हमारे किये जो कुछ है ये (नरनारायणदेव) है। ये सभी के गुरु है। सर्व कर्ता-धर्ता है। सभी का कारणो के कारण है। ये देव का उमरा, और देव का प्रांगण कभी छोडा नही इसमें सब कुछ निहित है।

देव के प्रांगण में खडा रहने का मौका मिला है। आप पीछे खडे रहकर कब से तपस्या कर रहे है। हम भूलेगे नही। बहुनो को भी क्यो भूले ? गादीवाला के साथ रहकर कई बहने गाँव-गाँव में सभा करती है। बल्कि आप लोगो को ज्ञात ही होगा कि अपने मंदिर में बगल में बन रहा आंगन (अनाथाश्रम) में गादीवाला के देखरेख में कई बहने बालको की सेवा देख-रेख पूरी जिम्मेदारी से करती है। इन बच्चो को संस्कार इन्ही औरतो से मिलता है। ये भूलना नही है। खूब-खूब अभिनन्दन आप सभी का महाराज मंगल करे। बच्चे-बच्चियाँ सुखी बने। महाराज सबका भला करे। सभी एक रहे और आनंद करे। यही श्री नरनारायणदेव के चरणो में वंदना है।

(अनु. पेईज नं. ९ से आगे)

भक्तोने संतो को भोजन के लिये पंक्ति में मिठाई देकर तृप्त किये है। जो सभी पुण्य के स्वामी है। जो भक्तो को सुख देते है। कल्याण भी करत है। जो धर्म के शत्रु के लिये भंयकर है। जो धर्म को सदैव धारण करते है। योग सिद्ध का ध्येय है। मोक्ष देने वाले है। जिनका आश्रय लेने पर जीव का संसार में जय-जयकार होता है। संसार को ज्ञान रुपी दिव्य प्रकाश देते है। दिव्यता के स्वामी है। गरीब और दुर्बल के उपर करुणा करना वाले है। ऐसे मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का सभी जगह पर जय-जयकार हो।(६)

खंडितचंडं पंडितमंडं जितपाखडं दंडभटम्।
कंपितकालं वृषकुलपालं वरवनमालंपीतपटं ॥ जयजय..॥७

अपने भक्तो को उपदेश देते समय नास्तिक चार्वाक और आवास मार्गीयो के मत का खंडन करते है। सत्यवादी पंडितो का सम्मान करते है। जगत में पाखंड फैलाने वालो पर जीत हासिल कर लिये है। अपराधकरने वाले को दंड देने में कुशल है। जिसकी नजर से काल माया काँप उठती है। जो धर्मदेव के वंश का भारण-पोषण करते है। जिसके गले में सुगंधित पु,वो वाली माला का हार है। जो हमेशा पीला वस्त्र धारण करते है। जिसका आश्रय मिलने पर जीव का संसार में जय-जयकार होता है। सम्पूर्ण जगत को ज्ञान की दिव्यता देते है। दिव्यता के मालिक है। गरीब कमजोर के उपर करुणा करने वाले है। ऐसे मेरे ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का सभी जगह पर जय-जयकार हो। (७)

श्रितसुखकंदं बोधितमंदं सहजानंदं त्वधिभजे।
कुरू तव दासं चरणनिवासं त्यक्तकुवासं योगमुनिम् ॥
जयजय..॥८

जिसके चरित्र का गुणगान सुनने वाले के आश्रितो को भी सुख देता है। मंदबुद्धिवाले अज्ञानी जीवो को अपने स्वरुप का ज्ञान देते है। भक्तो को सरलता से आनंद देते थे। वे आप सहजांद स्वामी है। मैं योगानंद मुनि अति भाव से भजता हूँ। मेरे में व्याप्त सभी प्रकार की कुवासना को छुडाकर अपने चरणारविंद में स्थान दे। ऐसी हमारी प्रार्थना है।(८)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

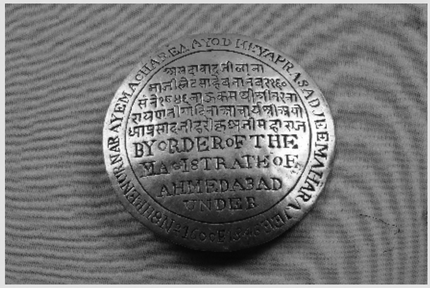

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गद्दी के आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री का गद्दी अभिषेक १७ वर्ष की उम्र में हुआ था । और वे ४२ वर्ष तक आचार्य पद पर विराजमान रहकर सत्संग के उत्कर्ष किये थे ।

उस समय के उत्सव समैया में, आगमन के समय, शोभायात्रा में आचार्यश्री के सवारी का दर्शन होना एक अद्‌भूत अवसर होता था । वे हाथी-घोडा के रथ या वाहन में विराजमान रहते थे । साथ में संत-महंत का समूह होता था । हजारो हरिभक्त दोनो हाथ जोड कर नत मस्तक खडे रहते थे । शस्त्रधारी पार्षद पंक्ति में खडे रहते थे । हाथी-घोडा के उपर नौबत बजती रहती थी । उत्सव वाले मृदंग लेकर ओचल करते थे । औरते मर्यादा में रहकर मंगल गीत गाती थी । भूदेव स्वति वाचन कते थे । हरिजन मात्र दिव्यानंद में रहते थे । समर्थवान संतो के हाथ में माला और आधे रुप दाने वाले माला देखकर लोग जीव को समाधी हो जाती थी ।

ऐसे समय में पार्षदो एक विशिष्ट मोह थी ।

सेवा करना सदैव शिरोधार्य, नजी जीव के कल्याण हेतु है ।

पधरामणी में साथे जावु, नीचे जोईने निष्कामी थावुं,
शस्त्रधारी थावुं शूरवीर, खरे वखते खोवुं नही नीर,

(हरिलीलामृत कडवुं-९, विश्राम-१२)

आचार्यश्री के पार्षदो की विशिष्ट पहचान के लिये उसे चाँदी का सिक्का देते थे । अंग्रेज मजिस्ट्रेट भी उन्हे समर्थन देते थे । और विशेष नम्बर का आदेश भी देते थे ।

इस इतिहास की झाँकी दिखाते अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के पार्षदो का बिल्ला मूल स्थिति में धर्मवंशी आचार्यश्री की परम्परा भी रहे । उसे बड़े महाराजश्री ने हरिभक्तो के दर्शन हेतु म्यूजियम में रखवाये है ।

सम्प्रदाय के पार्षद हो या हथियार हो, राजा के विना आदेश के कुछ भी नही था । राजधर्म का पालन यहाँ का धर्म था । सत्ता पक्षने भी कईबार विवेकपूर्ण निर्णय लेकर मूल सम्प्रदाय को अधिक सहायता प्रदान किये थे ।

इस इतिहास को जानकर और दर्शन करने से, उस समय के आचार्यश्री तथा उनके संतो-पार्षदो की महिमा समझ में आयेगी ।

इन बिल्लाओ का दर्शन स्वामिनारायण म्यूजियम हाल नं. ११ में होगा । सभी हरिभक्तो से निवेदन है कि उसका प्रेम से दर्शन करे

– प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची (जुलाई-२०१९)

दि. ०७-०७-२०१९	रमेशभाई जी. काछडिया - बापुनगर - ह. ज्योतिबेन तथा जतीन तथा दर्शन तथा पुत्रवधु निलमबेन।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि जुसाई-२०१९

दि. ०७-०७-२०१९	देविनाबेन भरतभाई जादवा - बोल्टन (यु.के.)।
	(दोपहर में) वसंतीबेन पी. पटेल - मणीनगर - हा. अनीषाबेन तथा खुश।
दि. ११-०७-२०१९	भरतभाई शंभुभाई हीरपरा - वडोदरा।
दि. १४-०७-२०१९	रमणभाई चतुरभाई पटेल - साबरमती।
	(दोपहर में) कांतिभाई गोविंदभाई परमार - कालुपुर।
दि. २१-०७-२०१९	धीरजभाई लाभुभाई पटेल - कल्याणपुरवाला मेमनगर।
	(दोपहर में) जैमीन प्रफुलभाई ठक्कर - वस्त्रापुर (नरनारायण फार्मसी)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-जुलाई-२०१९

रु. २६,६००/-	सां.यो. सुंदरबा गुरु सां.यो. रतनबा - ह. सां.यो. चंबापा तथा सां.यो. भारतीबा।
रु.५,१००/-	क्षमाबेन (भालजा साहेब मंडल) - अहमदाबाद
रु.५,०००/-	भगवतभाई एफ. शाह - गांधीनगर - पू. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से
रु.५,०००/-	मीनाबेन के. जोषी - बोपल
रु.५,०००/-	जयेन्द्रभाई सोनी - पलियडवाले - राणिप - जन्म दिन पर
रु.५,०००/-	सां.यो. बबबा तथा महिला मंडल - स्वामिनालायण मंदिर कालीयाणा - गुरु पूजा के अवसर पर

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

भगवान को खुश करने के लिये

- शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

चातुर्मास प्रारम्भ हो अर्थात् विशेष भजन-भक्ति का मौसम शुरु होता है। मंदिर में झूला महोत्सव और श्रावण मास में शिवजी की पूजा तथा कथा वार्ता की विशेष आयोजन किया जाता है। भक्त उत्साह से कथा सुनने जाते है। मित्रो ! आप को तो ज्ञात है कि ? स्वामिनारायण भगवान का कथा सुनना अच्छा लगता था। इसलिये तो चातुर्मास के विशेष नियम में आठ प्रिय नियम उसमें सर्व प्रथम ''विष्णो कथाया: श्रवणं'' भगवान की कथा सुनना है। इसलिये मित्रो ! आज अपने कथा श्रवण का एक प्रसंग पढते है।

इष्टदेव स्वामिनारायण भगवान भक्तो को दर्शन का सुख देने के लिये कच्छ भुज गये थे। वहाँ परि अनेक गाँवों टहलते हुए मानकूवा गाँव होकर रामपुरा गाँव में गये ते। प्रभु वहाँ पर एक दिन भाविक भक्त के घर ठहरे थे। बाद में रामपुरा से पश्चिम दिशा में रुकमावती नाम की नदी प्रवाहित होती है। वहाँ पर प्रभु आये थे। यह स्थान प्रभु को बहुत अच्छा लगा। नदी का किनारा चारो तरफ वृक्षो की शोभा, नदी में कल-कल करती नदी जल की मधुर संगीत सुनाई देता है। नदी के किनारे एक गोमुख में से पानी बह रहा था। नीचे शिवलिंग उपर अखंड जलधारा गिर रही थी।

रुकमावती नदी के किनारे जंगल, शांतवातावरण, वृक्ष और वनजीव से शोभित रुकमावती नदी के किनारे महाराज पंन्द्रह दिन रुके थे। महाराज के साथ प्रणजी पुराणी भी थे। महाराज पुराणी से बोले ''पुराणी हम यहाँ एक कार्य करे। महाराज ! यहाँ जंगल में क्या होगा। अरे पुराणीजी ! जंगल में जो कार्य होगा वह शहर में नहीं हो पायेगा। अच्छा महाराज आज्ञा करे। देखो पुराणीजी ! यह रुकमावती नदी का तट है। गोमुख से सुंदर जल शिवजी के उपर गिर रहा है। बगल में सांत वातावरण है। यहाँ पर भागवत सप्ताह करे। महाराज ! यहाँ भागवत सप्ताह कौन सुनने आयेगा ? महाराज बोले, पुराणी कौन अर्थात् ? हम, दूसरा कौन ? पुराणीजी को महाराज की आज्ञा मिल गयी। और भागवत कथा प्रारम्भ हुई। रामपुरा गाँव के लोग कथा सुनने के लिये आने लगे। जय-जयकार होने लगा। वक्ता प्रागजी पुराणी, मुख्य श्रोता श्रीजी महाराज और गाँव के हरिभक्त थे। अति आनंद लोग को मिलने लगा था। श्रोता को आनंद तो आता ही था। परंतु पुराणीजी कहते है कि महाराज को भी कथा में आनंद आ रहा था। कथा में आंद आना अर्थात् श्रीहरि का सानिध्य और कथा कहना और सुनना आध्यात्मिक किय्या है। लौकिक क्रिया नही है। कईबार कथा की पारायण को मनुष्य लौकिक मान लेता है। वाह-वाह हो इस लिये कथा में सांति ही नही। वर्तमान सभा में मान सन्मान, सत्कार होता है। ऐसी वाह वाही में सभा तो कही और चली जाती है।

भागवत परमहंस संहिता है। शास्त्र मन का मैल धोने के लिये है। कथा और पारायण आत्माको बलवान बनाता है। वाह.... वाह करने के लिये नही होता है। सन्मान सत्कार करने के लिये एक माहौल बनाने के

लिये हम शास्त्र को एक निमित्त बना देते है। जो दवा पीने के लिये थी। वह दिखाने के लिये रह गयी। शास्त्रो के रहस्य के अंदर उतरना था। हम अपने उपर कवर बना लेते है। इलिये वह फलदायी नहीं होता है। वह कार्य मात्र वाह-वाही में ही रह जाता है।

जब कथा पारायण का प्रबन्धहो तब उसके ध्येय पर विचार करना चाहिए। कि यह कथा शांति के लिये है। सत्संग का बल बढता है। जीवन में कहाँ-कहाँ पर भूल होती है। कि नही होती है। ये सब हिसाब करने के लिये है। कथा यह हमे सिखाती है। कथा कोई मनोरंजन का साधन नही है। कथा भक्तके जीवन का दर्पण है।

सात दिन का सप्ताह पुराणीजीने किया। पुराणीजी कथा कहते थे। तब महाराज की मूर्ति के सिवाय दूसरी जगह मन नही जाता था। सबको शांति और आंद की प्राप्ति होती थी।

अंतिम दिन महाराज बोले, पुराणीजी, दक्षिणा तो नही है। क्या करेगे ? इस रुकमावती नदी के किनारे आप को क्या दक्षिणा थे ? पुराणीजी बोले, महाराज ! दक्षिणा की क्या आवश्यकता है। आप खुश हुए यही दक्षिणा है। पुराणीजी ! ऐसे नही चलेगा किसी भी कार्य की समाप्ति पर दक्षिणा तो दिया जाता है। उसी समय भगवान के पास कच्छ के कुछ भक्त आये। महाराज को प्रणाम करके भेट दिंये। ये भेट श्रीजी महाराजने पुराणी को दे दिया था। ले स्वीकार करे। यह तो सद्‌भावना की भेट है। रामपुरा के बगल में रुकमावती नदी के किनारे बड़ा उत्व हो गया। जय जयकार होने लगी।

मित्रो ! आपने पढा ? कथा सुनना अच्छी बात है। हमारे ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवानभी उपदेश के लिये बार-बार कथा सुनते थे। तो आप भी कथा सुने ? इस चातुर्मास में अपने गाँव के मंदिर में जाकर कथा पढा कोई पढने वाला न हो तो आप मंदिर में जाकर कथा पढे और दूसेर भक्तो को सुनाये। महाराज आप पर खुश होगे।

अभी वचनामृत का द्विशताब्दी वर्ष चल रहा है। इस लिये वचनामृत पढना मत भूले। आप पढो और सुनाओ। दूसरे भक्तो को पढने के लिये प्रेरणा दे। हमारे ईष्टदेव आप से अत्याधिक खुश होगे।

•

श्रध्धा की बात अनोरवी

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

बाल मित्रो ! अभी गुरु पूर्णिमा का पर्व उत्सव से मनाया गया था। हम लोग कितने भाग्यशाली है कि हमें गुरु नही खोजना पडा। स्वामिनारायण भगवानने स्वयं धर्मवंशी गुरु दिये है। तो आओ गुरु के प्रति शिष्य का भाव कैसा होना चाहिए। उसके बार में बात करते है। जीवन में श्रद्धा है तो बहु मूल्य है। श्रध्धा के विना कुछ भी नहीं मिलता है। इस लिये कहा जाता है कि ''श्रद्धावान लभते ज्ञानम्'' शास्त्र में भगवान के रुप में और गुरु की वाणी में जिसकी श्रद्धा होती है। उसा काम बन जाता है। आज की यह बात हमें श्रद्धा से क्या काम है। जानना अति उपयोगी है।

यह उस समय की बात है। जब जिज्ञासु, मुमुक्षु ज्ञान प्राप्ति के लिये व्यक्ति को सच्चे गुरु को खोजना पडता था। गुरु की प्राप्ति के बाद उनकी सेवा करके उन्हे खुश करना पडता था। गुरु की परीक्षाओ में से पास होना पडता था। बाद में गुरु खुश होकर शिष्यो को ज्ञान देते थे।

किसी गाँव में एक धनवान प्रतिष्ठित शेठ व्यापारी थे। उनके पास एक पुत्र था। उसे प्यार से पालकर बड़ा किये थे। क्या जाने उस शेठ के पुत्र को वेद-वेदांत ज्ञान प्राप्त करने की तीव्र ईच्छा हुई। वह यह बात अपने पिता से

कहा । चारो तरफ खोज होने लगी । सच्चे गुरु का पता चला । शेष अधिक खुशी के साथ पुत्र को गुरु के पास रहकर ज्ञान प्राप्त करने की अनुमति प्रदान कर दिये ।

यह युवक गुरु के पास आकर विनयपूर्वक प्रणाम किया और आने का कारण बताकर अपना भी परिचय दिया । अपने पास ज्ञान प्राप्त करने आये युवक की श्रद्धा कैसी है ? जिज्ञा कैसी है । उसकी परीक्षा लेने के लिये । गुरु ने तीर्थाटन करने और शिष्य को साथ रखने का निश्चय किये । उचे पहाडो पर गहरी घाटियो में घनघोर जंगल में शिष्य गुरु के साथ घुम रहा था । भूख-प्यास लगाने के बाद भी सुखी युवक पुरी श्रद्धा से गुरु की सेवा आनंद और उत्साह से करता था । खुद भिक्षा मांग लाता था । पहले गुरु को खिलाये बाद में बचा भोजन खुद खाता था । कभी गुरु क्रोधित हो जाते थे । तिरस्कार कर देते थे । फिर भी पूरे प्रेम से सेवा करता था । दिन-प्रतिदिन गुरु में स्नेह और श्रद्धा की वृद्धि इस शिष्य में बढने लगी थी ।

एक दिन गुरु-शिष्य अधिक पैदल चले थे । वृक्ष की छाया में दोनो लोग आराम करने के लिये रुके शिष्य को नीद आ गई । वहाँ एक घटना घटी कि गुरुने ध्यान दिया एक काला नाग शिष्य के पास फूंफकार रहा था । शिष्य उस दिशा में सोया था । उस दिशा में अधिक गति से आगे बढ रहा था । गुरु यह दृश्य देखकर घबारा गये लेकिन जडी-बूँटी के जानकार थे । मंत्र बोले नाग के गति कम हो गयी । वह रुक गया । रुकने के कारण नाग अधिक क्रोधमें आ गया था । गुरु ने दूसरा मंत्र बोला नाग को ज्ञान आया । वह क्यो यहाँ आया है । उसका कारण बताने लगा ।

हे महात्मा ! जो शयन कर रहा है । वह पूर्व जन्म में मेरा शत्रु था । मैं काफी दिनो से इसे खोज रहा हूँ । लेकिन आज मिला है । मुझे उसके गले का रक्त पीकर वैर का बदला लेना है । मुझे बदला लेने दे । यह मेरा काम भी है । गुरु के मन में विचार आता है । यदि इस नाग कोी इसके अनुसार काम करने देगे तो यह नव युवक जो विद्या की प्राप्ति के लिये कई कष्ट सहा है । मेरे साथ पूरी निष्ठा और प्रेम से घुमा है । इसकी एक क्षण में मृत्यु हो जायेगी । यदि ऐसा हुआ तो में अपने को कैसे क्षमा करुँगा ?

महात्माजी नाग से बोले, आप को तो खुन चूसना है तो मेरा खून चूस ले । मैं तैयार हूँ । लेकिन नाग नहीं तैयार हुआ । गुरु नाग को समझाने का प्रयास करने लगे । हे नागराज आप जिस सोय से आप यहाँ आये है । अच्छी सोच नही है । बैर की बात को जीवित रखने से शांति का नाश होता है । वैसे भी गुरु की सेवा से युवक का अन्तःकरण शुद्ध हो गया है । यदि आप उसे माफ कर देते तो ज्ञान प्राप्त करके मुक्त हो जायेगा । आप क्षमा कर देगे तो आप को अक्षय पुण्य प्राप्त होगा । इतना समझाने के बाद भी नगा नही माना ।

इतने में गुरु के दिमाग में बिजली की तरह एक विचार आया । उन्होने नाग से कहा, हे नागराज, आप को उसके गले का खून पीना है ? हाँ, आप यही पर खडे रहे । मैं उसके गले से खून निकालकर देता हूँ । अंततः नाग सहमत हो गया । गुरु अपने थैले में से धारदार चाकू निकाले । वृक्ष के पत्ते का दोना बनाये । निद्राधीन शिष्य के गले पर धीरे से चाकु घमाकर चोट किये । यह शिष्य देख लिया, ये तो गुरुजी है । आँख पुनः बंद कर लिया । गुरुने दोने में खून लेकर नाग को दे दिये । और कोई दवा लगाये जिससे धाव ठीक हो गया । नाग को खून पीने को मिल गया । उसकी शत्रुता का बदला प्राप्त हो गया । वह खुश होकर चला गया ।

कुछ समय के बाद गुरु और शिष्य वहाँ से चल दिये । गुरु को लगा शिष्य अभी कुछ प्रश्न करेगा ।

(पेईज नं. २२)

॥ भक्तिसुधा ॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "जीवन में सावधानी यह बड़े से बड़ा 'कवच' है ।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल – घोडासर)

जब जीवन में संकट और कठिनाई आती है। तब मनुष्य यह विचार करता है कि भाग्य खराब है। लेकिन हर बार भाग्य खराब हो ऐसा नही होता है । हमारे असावधानी के कारण जीवन में संकट आते है। हमारी असावधानी ही जीवन की सबसे बडी भूल होती है । जीवन में कोई कठिनाई आये । तब विवेक से विचार नही कर पाते है। घबरा जाते है। उस समय क्या करें ? जैसे हम किसी नये मार्ग पर जाते है। तो हमें रास्ते का ज्ञान नहीं होता है। जमीन कैसी है और रास्ता कैसा है। वहाँ पर हम एक पैर पर खडे होकर दूसरे पैर से आकलन करते है कि रास्ता कैसा है। तो यह हो गई सावधानी । किसी प्रकार जीवन में कैसी भी तकलीफ आये। उससे भागना नहीं चाहिए । आगे तो जाना ही पडेगा । यही अपनी परीक्षा है। लेकिन शांति से सोचकर निकलने का मार्ग तय करे । संकट तो आ ही गया है । उसमें से निकलना ही पडेगा। ध्यान यह देना है कि जल्दबाजी में असावधानी न हो जाये। विचारो की सावदानी अर्थात् भविष्य का 'आकलन' जिससे भविष्य में आने वाले संकट का प्रभाव कम हो जाये। हम सुरक्षित हो जाते है। वर्तमान में सावधानी रखना ये सुरक्षा कहा जाता है। हम भविष्य देख नही सकते है। मैं जो करने जा रहा हूँ। उसका परिणाम क्या प्राप्त होगा। उसे शांति से विचारना, सावधान रहना उसे सुरक्षा कहते है। उसने अपने जीवन में आने वाला संकट है । उससे लडने के लिये परिश्रम करना पड़ता है। वह आधा हो जाता है। हम जब पहाड पर चढते है तो ढाल वाले मार्ग को शीघ्र पार कर लेते है। इसी तरह जीवन में सावधानी ढाल रुप में है। इस लिये भूलकर भी जल्दबाजी नहीं करना चाहिए।

जीवन में किसी भी व्यक्ति को जब कुछ समझ में नही आता है । तो दूसरे की नकल करता है । सबको ज्ञात है कि स्कूल में परीक्षा होती है। जिसे कुछ नही आता है। तो दूसरे में से नकल करता है। और पास भी हो जाता है । उसका मुख्य कारण है । सभी का प्रश्न पत्र समान होता है । समय मर्यादा भी समान होता है । प्रश्नक्रमांक भी समान होता है । सबी परिस्थितियां समान होती है। अर्थात् पूछकर नकल करके भी पास हो जाते है। लेकिन जीवन रुपी परिक्षा में सभी के प्रश्नप त्र अलग-अलग होता है। तो जीवन की परीक्षा में दूसरे की 'नकल' करने से पास नही होते है। की बार ऐसा लगता है अभी हमारी स्थिति अच्छी नहीं है । उनकी और दूसेर की थी । उनसे पूछकर पास कर लेगे । इस तरह ९९% सफलता नही मिलती है । क्यो कि ? समय मर्यादा विवेक-बुद्धि से विचार से अवस्था थोडा बदल जाती है। इसलिये जीवन के प्रश्नोत्तर पहले स्वयं खोजना पडता है । जीवन में संघर्ष तो चलता रहता है। स्वंय निराकरण लाना पडता है । इस लिये सभी को प्रयास करना पडता है । विश्वास रखना पडता है । उस कल होने पर प्रयास छोड देते है । जीवन की परीक्षा में फेल होने का मुख्य कारण क्या है ? अपना प्रयास कम होता है । १००% परिणाम के लिये ९०% प्रयास करते है। शेष १०% प्रारब्धके उपर होता है।

कुँवा में से पानी खीचने के लिये रस्सी कितनी मुलायम होती है। कुछ समय के बाद पत्थर को घिस देती है । इसी प्रकार लगातार परिश्रम करने से अपने प्रारब्धको सक्षम बना सकते है। इस लिये प्रयास कभी

नही छोडना चाहिए । हम कुल्हाडी से कोई पेड काटने का प्रयास करे तो पहले प्रयास में नही कटता है । दूसरे तीसेर चोट से निशान बनता है । अन्तिम प्रयास में कट जाता है । इसी प्रकार कठिनाई पार करने के लिये सतत प्रयत्न करना पडता है । नकारात्मक विचार नही करे । अपने विचार सकारात्मक एवम् विशाल रखे । तो समस्या छोटी लगेगी । आज्ञा और नियमानुसार आगे बढे । विश्वास और निस्चित प्रयास प्रयत्न शक्ति शाली बनाते है ।

जीवन में अधिक परीक्षा होने के कारण आगे का जीवन अच्छा सुखदायी बन जाता है । कैसी भी अवस्था हो खराब समय में भी अच्छाई छिपी रहती है । काला घोर बादल होता है । गर्जना अधिक होती है तो भी मेघ के किनारे एक सुनहली आभा होती है । बाहर इतनी गरमी है । यह किसी को अच्छा नही लगता है । दूसरे रुप में विचार करे तो गरमी से सागर का पानी बाष्पीकृत हो कर के भाँप के रुप में उपर जाता है । इस कारण से अच्छी वर्षा होती है । बाद में ठंड प्राप्त होती है। जो आनन्द देती है । इस प्रकार खराब मे भी कुछ छिपा रहता है। ऐसा सोचने पर जीवन जीवना सरल हो जाता है । जब परिस्थिति ऐसी हो कि अवस्था से छुटकारा नहीं मिल सकता है ये अपने हताश की बात नहीं है । अधिक दुःख लेकर कैसे जीव सकते है । क्या होने वाला है ? हमें पता नही है । तब मान ले भगवान की मरजी ऐसी है । जो कर रहे है अच्छे के लिये कर रहे है । क्योकि ? यदि ऐसा न करे तो जीवन कैसे व्यतीत करे ? यह यात्रा कब पूरी होगी । यह अपने बस की बात नहीं है । मन से थक जाये । शरीर से थक जाये, कुछ भी हो जो अपना जीवन है । उसे पूरा कर ना ही पडेगा । आत्म हत्या करने के लिये महाराजश्रीने मना किया है । हमें ऐसा लगता है कि आत्महत्या से सारे कर्म पूरे हो जायेगे । बल्कि और परेशानी बढ़ती है । चलते-फिरते महाराज याद करे महाराज के उपर श्रद्धा रखकर जीवन सहजता से व्यतीत करे ।

•

मोह

– सांख्ययोगी कोकिला (सुरेन्द्रनगर)

जिसे अंतर की प्रमाणिकता से साधु बनना है । भगवान का सच्चा भक्त बनना है । उसे खराब विचार आते है । अपनापन, सगे सम्बन्धी परिवार माता-पिता शरीर इन्द्रिय, अन्तःकरण ये स्वभाव भगवान के प्रति भाव रखने में रुकावट डाते है । वह भगवान को भजने दे ऐसा नही है । जीव भगवान को बजे उसे अच्छा नही लगता है । ये सब मोह के जड़ है । सरहद की सेना के अलावा ये सैनिक है । बाहर के शत्रु से खतरनाक ये शत्रु अलग है । उसकी लडने का तरीका भी अलग है । ये सब अपने घर में रहकर अपना ही खाते है तथा सामने लडते भी है । अपना प्रिय बनकर मोक्ष के लिये रोकते है । घर के घातकी है । मोह स्वयं एक है । लेकिन उसके सैनिक अनेक है । वह अलग-अलग पदार्थो के माध्यम से हमारे सामने आते है । जैसे कि कपडा, दर्पण, अपनी शरीर स्त्री को पुरुष में पुरुष को स्त्री में अपने कार्यो से जीव को मोह लेते है । उसको छोडने का मन नही करता है । वह जीव का कितना नुकसान करे फिर भी छोडने का मन नही कहता है ।

आनंदजीभाई संघाडियाने महाराज से मोह के रुप को बताये है । ''रक्तकृत सदा पूतं'' यह मोह का रुप है । अपना अवगुण न दिखे । अपने कार्य में भूल कमीन दिखाई दे । अपना लडका खराब हो तो भी अच्छा लगे । अपनी घर वाली कालिका स्वरुप याचंडी हो । (लड़का) तो भी अच्छी लगती है । ये सब मोह है ।

इस जीव को बड़े लोगो की भूल दिखाई देती है । न होने पर भी दिखाी देती है । इसे मोह कहते है । मोह एक मानसिक रोग है । मानसिक रोग और शारीरिक रोग में अन्तर होता है । दोनो की दवा भी अलग-अलग होती है । सबसे बड़ा अन्तर यह होता है कि जिसे यह होता है वह स्वयं को इस रोग का रोगी नही मानता है । अपने सामने वाले को रोगी मानता है । यह उसकी विशेषता होती है ।

पागल व्यक्ति अपने को पाला नही मानता है । क्योकि पालगपन मानसिक रोग है । वह डाक्टर और देख-रेख करने वाले को पागल मानता है । अपने को अच्छा और स्वस्थ समझता है । उसी प्रकार मोह मानसिक रोग है । मोहित व्यक्ति को अपनी भूल नही दिखाई देती है । दूसरे की ही भूल दिखाई देती है । ऐसा हो तो मोह व्याप्त हो गया होता है । वह शीघ्रता से नष्ट नही होता है । उसका नाश करना भी कठिन है । ''मरे पळ मोरचो नव त्यागे''

रामायण में रावण को मूर्तिमान मोह का रुप मानते है । रावण में मोह की तुलना अधिक है । रावण जब युद्ध के मैदान में राम के सामने लडने आया । तब लडाई में कई विविधता थी । भगवान राम रावण की भूजाये और सिर काटते थे लेकिन वहाँ तुरंत दूसरी भूजा और सिर उग जाते थे । लडने वाला एक सिर वाला हो, सामने मोह रुपी रावण दस सिर वीस भूजा वाला हो काटने पर पुनः उग जाये । तो क्षण भर भगवान भी धबरा गये । अब क्या करे ? इसके मोह को कैसे समाप्त करे । हम लोग भगवान के कथा में बैठे रहते है । भगवान की अच्छी चर्चा चल रही हो । सुनने में मग्न हो जाते है । तब लगता है कि इसका मोह समाप्त हो गया । अब मुक्त हो रहा है ? लेकिन ज्यो ही कथा में से उठता है । पुनः रावण के सिर की तरह जीवित हो जाता है । ऐसी उसकी अवस्था हो जाती है . उसे रावण के सिर का उगना कहते है । कभी-कभी कथा श्रवण में ऐसा लगता है कि अब मोह से विरक्त हो गये है । अन्तर का भाव बदलने लगता है । लेकिन एक पल में मोह फिर जकड लेती है । यह मोह की विचित्रता है .

हम मोह को जीत लिये । ऐसा मान कर कभी भी न बैठे । यह लडाई मरते दम तक चलती है । मोह तो भगवान की कृपा से समाप्त हो सकता है । रावण को भगवान ही मार सकते है । परशुराम नही मार सकते है । मोह के साथ लडना, अर्थात् भगवान के प्रति प्रेम रखना भगवान के आज्ञा का पालन करना, सत समागम करना, और भगवान की भक्ति करना है । तभी माया दोष का नाश होता है । निष्कपट सेवा करना । जो ऐसा नही करते है । वे संसार में दुःखी रहते है । और खराब गति होती है ।

लवियाँ नाम का भक्त था । वह जूनागढ के मंदिर में संतो की सेवा करता था । लेकिन स्त्री, धन आदि के वासना से मुक्त नही था । ईश्वर योग से लवीया की पत्नी मर गयी । उसको मन अधिक दुःखी हुआ । उसी समाज की एक रुपवान स्त्री थी । वह सघवा थी । वह उसके रुप पर मुग्धथा । विषय आसक्त होने के कारण वह सोचता था कि वह औरत विधवा हो तो मैं उससे शादी करुँगा । वह लाधा राठौड के साथ यह बात किये । तब वह बोले छ महिना तक सझवारी करते सकार्म भाव से काम करो तो आप के कार्य की सिद्धि मिलेगी । तब उसने सेवा करने का नियम रखा था । उसके मन का ऐसा मलिन संकल्प सद्गुरु गुणातीतानंद स्वामी अन्तर्यामी होने के कारण जान गये थे । इस लिये स्वामीजी उससे बोले ''अरे लविया'' । खराब कार्य मत करो । अच्छा काम करो ? फिर भी मन में कपट रखकर स्वामी से बोला अच्छा है । मैं अच्छा काम करूँगा । लवियो मंदिर में सेवा प्रदान कता हो उसी समय रुपवान स्त्री मंदिर में दर्शन करने हेतु आयी थी । उस समय लवियो गलत मन में संकल्प करता था । इस तरह चार-पाँच वर्ष तक वह विधुर रहा । उस रुपावन स्त्री को भूला नही था । संयोगवस स्त्री का पति स्वर्ग सिधार गया । लविया तुरंत स्त्री के पिता से मिला । माँग अनुसार धन देकर उस रुपवान स्त्री को घर लाया । गलत भावना से स्त्री को घर लाया था । इस लिये सुख नही भोग सका था । स्वामी को मालूम था । फिर भी पूछे कि लविया तुम्हारा घर संसार कैसा चल रहा है ।'' उसने कहा ''घोडा सवारी के लिये लिया था । अब तो उठाना पडता है ।'' संसार में आयी उसके छः महीने बाद उसे संग्रहणी रोग हो गया । बारह महीने तक दवा किया । अपने शरीर से सेवा करनी पडी । तब औरत ठीक हुई । अब उसे लगा कि जीवन सुखमय

बनेगा । लेकिन इतने में लविया का जीवन काल पूरा होने के पास आ गया था । अंतकाल का समय आ गया । तब महाराज, गुणातीतानंद स्वामी, लविया के लेने आये, तब लविया ने दोनो हाथ जोडकर प्रार्थना करने लगा । मैं अभी गृह जीवन शुरु किया हूँ । मुझे मत ले जाये । तब गुणातीतानंद स्वामी बोले इसने मंदिर और संतो की सेवा किया है । कुछ भी कर के इस देह से मुक्ति दो । बाद में गोपालानंद स्वामी योग बल से उसकी स्त्री के समान रुप दिखाये । वह स्त्री उससे बोली कि ''श्रीजी महाराज आये है । उनके साथ मैं अक्षरधाम में जा रही हूँ । आप आ रहे है क्या ? लविया सोचा पत्नी जा रही है । तो हमें भी जाना चाहिए । लविया तुरंत बिराजित हुआ । रथ में स्त्री न होने के कारण दुःखी हो गया । और रास्ते में इलावत खंड आया । मोह बस इलावत खंड में उतर गया । उसकी असद्‌गति हुई । इसलिये मोह किसी भी पदार्थ में नही रखना चाहिए ।

•

पठाण की प्रतीति (आभास)

– लाभुबेन मनुभाई पटेल (कुंडाल, कडी)

जूनागढ सेना में नौकरी करने वाले एक पठान झीझावदर के रास्ते में जा रहे थे । वहाँ पर उनके अन्तःकरण मं शान्ति का अनुभव हुआ । उस कारण से रुक गये । उसे चारो तरफ प्रकाश का पुंज दिखाई देने लगा था । उन्हे ऐसा लगा कि मक्का-मदीना का हज करके आ गये हो । उससे अधिक शांति यहाँ पर मिल रही है । मुझे लग रहा है कि इस गाँव में कोई निश्चित औलिया फकीर रहता होगा ।

यह सोचकर सडक से गांव में आये । वह सामने से आते अलैया खाचर से पूछे कि ''इस गाँव में कोई औलिया फकीर है ? अलैया खाचर बोले, चले बताता हूँ । यह कह कर गाँव के मध्य में रामजी मंदिर पर बैठे बाबा को बताये । पटान हुक्का पीते हुए बाबा को देखा । उसे आभास नही हुआ । अलैया खाचर पठान को महाराज के पास ले गया । महाराज का दर्शन करने से उसे आभास हो गया । वह महाराज के पैर पर गिर करके नमाज पढने लगा । महाराज उसे समाधिकराये । उसने समाधिमें ८० हजार पैगम्बर के दर्शन कराये । उसने महाराज की 'खुदाता सौ कहकर स्तुति किया । ''मुझे आप अपने सेवा में रखे । ऐसी उसने माँग किया । महाराज उससे बोले 'आप घर जाईये, मूर्ति अन्तर में स्थान हम आप का कल्याण करेगे । आप को अन्त समय लेने आऊगा । पठान प्रणाम करके वहाँ से चला गया ।

महाराज वहाँ से निकलकर कारियाणी की तरफ चल दिये ।

•

अंधश्रध्धा

– हर्षाबेन शैलेषकुमार पटेल (प्रांतिज)

प्रत्येक व्यक्ति को संसार में जैसे सुख मिलता है । उसी प्रकार अनेक तरह के दुःख भी आते है । कभी सुख से अधिक दुःख की संख्या हो जाती है । भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, ब्रह्मराक्षस जैसे दुःख ऐसे होते है । जो अधिक परेशानक रते है । पिर भी दिखाई नही देते है । और मनुष्य को सारीरिक पीडा, धनहानि, मानसिक कष्ट काफी निर्दयता पूर्वक सताते है । कोई शत्रु हो तो मलिन मंत्र मारण उच्चाटन इत्यादि द्वारा महाज्वर तथा न पहचानने वाले रोग हो जाते है । दुःखी लोग दुःख निवारण हेतु अनेक प्रकार के उपाय करते है ।

कोई व्यक्ति दुःको के निवारण हेतु भगवान या ईष्टदेव की या संत सत्‌गरु की शरण में विश्वास रखकर दुःख से निवृत्ति प्राप्त करता है ।

जब कि कुछ लोग तत्काल सुखी होने के लिये तांत्रिको, ओझा, सोखा, मूठ, चोर विद्या जानने वाले अधोरी तांत्रिको के पास जाते है । और तांत्रिको के माया जाल में फस जाते है । अंत में खूब लूटे जाते है । निःसंतान व्यक्तियों के घर पालना आये । पुत्र का ही जन्म हो उसके लिये, रातो-रात लखपति हो जाये इसलिये क्या नही करते है ? इतना ही नही दूसरे के अकेले बच्चे की बलि चढाने में भी नही हिचकते है । अधोरी तांत्रिको

ओझा लालच दिलाकर यज्ञ-यज्ञादि का खर्च माँगते है। मैली माय के जाल में फसाते है। अंत में लोग लूटे जाते है। आज के वैज्ञानिक युग में केवल अशिक्षित ही नही बल्कि पढे-लिखे लोग भी मंत्र, यंत्र, तंत्र अंधश्रद्धा की रुढिपरम्परा से जुडे है। और धूर्त तांत्रिको के जाल में फस जाते है।

स्वामिनारायण भगवान लिखे है कि जो मनुष्य का अपना प्रारब्धहोता है। उसी के अनुसार व्यक्ति को सुख-दुःख मिलता है। किसी जीव को सुख-दुख मात्र परमेश्वर ही दे सकते है। दूसरे देवता समर्थ नही है। इस लिये एक परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए।

जंत्र-मंत्र किसी के उपर प्रभाव डालता हो तो बडे से बडे राजा के करई दुश्मन होते है। फिर भी जिंदा रहते है। यदि जंत्र-मंत्र से ही सिद्धि मिलती हो तो लाखो रुपया खर्च करके राजा सेना, हथियार, किस लिये रखते है। एक ही वलवान मंत्र शास्त्री रखकर मंत्र-तंत्र की सिद्धि करके दुश्मन राजाओ को समाप्त नही कर देता।

मंत्र-तंत्र के द्वारा कोई मनुष्य जिंदा रहता तो किसी की मृत्यु नही होती। अरे अधिक मंत्र-तंत्र जानने वाले भी मरते है।

इस लिये निर्भय होकर भगवान का दृढ संहारा रखकर भगवान नारायण की भजन करना चाहिए। जो होगा है वह होगा ही। इस लिये परम ब्रह्म पुरुषोत्तम ऐसे समर्थ भगवान का आश्रय रखे। यही श्रेष्ठ उपाय है। अपना अनमोल जीवन अंधविश्वास के पीछे नष्ट नही करे।

''श्रद्धा भरी जिंदगी जग मां कदी करती नथी,
श्रद्धा विहोणी जिंदगी जगमां कदी फलती नथी।''

(अनु. पेईज नं. १७ से आगे)

लेकिन शिष्य ने कुछ कहा ही नही। अंत में गुरु परेशान होकर शिष्य से पूछे कि हे शिष्य। हमने तुम्हारे गर्दन पर चाकु से चोट किया था। तुम्हे ज्ञात होने के बाद भी कोई विरोधनही किये। और शांतचित्त से सोये रहे। शिष्य अब गुरु को जो उत्तर देता है, वह अधिक विचारणीय है। हे गुरुदेव ! मेरी श्रद्धा है कि गुरु के हाथ से कभी शिष्य का अहित नहीं होता है। आपने जो कुछ किया होगा हमारे हित के लिये किये होगे। मेरे कल्याण हेतु ही होगा। ऐसा सोचकर आँख बंद कर लिया और शांत रहा।

इस घटना से शिष्य की इस समझदारी से गुरु खुश हो गये। शिष्य की श्रद्धा, विश्वास की भावना पर मानो सोने का कलश चढ गया। शिष्य को गुरु की सेवा से जीवित संसार में जैसे मंदिर बन गया। इतने क्षण में शिष्य के हृदय में ज्ञान का प्राकश भर गया। पिना विद्याध्यायन वेद वेदान्त उसके हृदय में बस गया। वह विद्वान बन गया। जिसकी प्राप्ति वर्षो तक अध्ययन करने से नही मिलती है। उसे क्षम बर में मिल गयी। गुरुने ज्ञान दिया। शिष्य गुरु को दण्डवत प्रणाम किया। गुरु का हाथ शिष्य के माथे पर फिरने लगा। शिष्य धन्य धन्य हो गया। और यात्रा पूर्ण हो गयी।

मित्रो ! आपने देखा ! गुरु के प्रतिश्रद्धा गुरु के प्रत्येक कार्य में विश्वास से शिष्य उच्चक्रम को प्राप्त करता है। भगवान के रुप में गुरुकी वाणी में जिसकी ऐसी श्रद्धा हो जाती है। वह सुखी बन जाता है। जिसकी अचल श्रद्धा नही होती है। वह कही पर भी सुख, शांति और ज्ञान नही प्राप्त कर सकता है। हम लोको की कैसी भाग्यै ह कि हम लोगो को ऐसे दिव्य सत्संग सरलता से संत समागम से मिली है। इसलिये श्रद्धा और विश्वास से भगवान की भक्ति करके मानव जन्म की सार्थकता प्राप्त करना है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में गुरु पूर्णिमा एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री का २२ वाँ जन्मोत्सव मनाया

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में और समग्र धर्मकुल उपस्थिति में अषाढ सुद-१५ ता. १६-७-२०१९ मंगलवार के दिन गुरु पूर्णिमा महामहोत्सव और अपने भविष्य के आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का २२ वाँ जन्मोत्सव समस्त संत हरिभक्तो ने विशाल जन समुदाय के साथ मनाया।

सर्व प्रथम प.पू. बड़े महाराजश्री, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती करके दर्शन करके सभा में आये थे। मंदिर के विद्वान गोर श्री कमलेशभाई के पुत्र ने सुंदर स्वस्तीवाचन करके धर्मकुल की पूजन विधिपूर्वक पूर्ण हुए। इसके बाद तीर्थो से आये हुए पू. संतो को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री पूजा आरती करके समुह की आरती किये थे। आज गुरु पूर्णिमा के भाग्यशाली यजमान श्री स्वामिनारायण सत्संग मंडल वाली (राज.) वर्त. मुंबई, इस में प.भ. किशनभाई माली (मुंबई), प.भ. मांगीलालभाई चौधरी, प.भ. हरिशभाई पुरोहित और प.भ. मगनभाई चौधरी आदि मंडलि के हरिभक्तोने प.पू. आचार्य महाराजश्री की पूजा करके आरती किये थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री सभी यजमानो को प्रसादी रुप में खेश ओढ़ाकर सन्मान किये थे। इसके बाद नरनारायण टेम्पल ट्रस्ट बोर्ड के सदस्य श्री तथा पूर्व सभ्यश्री और अग्रणी हरिभक्तने पूजा आरती किया। प.पू. बडे महाराजश्रीने सभी को हृदय से आशीर्वाद दिया था। श्री स्वामिनारायण म्युजियम में आये थे। आज के सुंदर सभा का संचालन विद्वान स.गु. पुज्य शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) बढाये ते। इस अवसर में विद्वान संतो में पू. स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर महंतश्री) स.गु. महंत शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंतश्री), पू. स.गु. महंत शा. स्वा. देवस्वरुपदासजी (माणसा महंतश्री) और पू. स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) मंदिर महंतश्री) तथा प.भ. प्रोफेसर श्री हितेन्द्रभाई पटेल आदि सभी ने श्रीहरि द्वारा प्रस्थापित सम्प्रदाय की गुरु परम्परा और गुरु पूजन की महिमा बताये थे।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और बाल मंडल प.पू. लालजी महाराजश्री का २२ वाँ प्रगटोत्सव अवसर पर २२ फूट का सुगंधीदार फुलो का हार प.पू. लालजी महाराजश्री को पहनाकर अपने धर्मकुल के प्रति निष्ठा दिखाई थी। श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर द्वारा नित्य नियम और कीर्तन की नये एव एप्लीकेशन प.पू. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के द्वारा लोंच किया गया था। कोटा मंदिर के महंतश्री शा. मुनि स्वामी शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी (गाँधीनगर), शा. स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (महंतश्री नारायणघाट) अने शा. स्वा. गोपालदासजी (प्रांतिज मंदिर) आदि युवक जुडे थे।

पू. स.गु. महंत स्वामी की प्रेरणा से आने वाले वर्ष गुरु पूर्णिमा के यजमान माणसा के प.भ. डाहाभाई पटेल परिवार का नाम पू. शा. राम स्वामीने किया था। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने समस्त सभा को आशीर्वाद दिये। (विस्तृत आशीर्वाद इस अंक में है) पुरे गुरु पूर्णिमा का भव्य आयोजन पू. महंत स.गु. शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी के मार्गद्रशन से पू. हरिचरण स्वामी (कलोल) पू. जे.पी. स्वामी, कोठारी पू. जे.के. स्वामी, भंडारी योगी स्वामी आदि संत मंडल और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सुंदर प्रेरणादायक सेवा किये थे। (शा. स्वा. नारायणमुनिदास - कोटा महंतश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में हिंडोला दर्शन

हमारे संप्रदाय के सभी उत्सव वैष्णव परम्परा में मनाये जाते है। ठाकुरजी का हिंडोला अषाढ वद-२ से श्रावण वद-२ तक होता है। प्रतिदिन साम को श्रीहरि का अनेक प्रकार के प्राकृतिक फूलो, फल, मेवा, राखी, चाकलोट, ड्रायफ्रुट आदि द्वारा नयन रम्य हिंडोला बनाकर ठाकुरजी झूलाये जाते है। प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर के पू. महंत स्वामीने संत मडंल, हरिचरण स्वामी, जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी, भंडारी योगी स्वामी, शा. मुनि स्वामी आदि संत-पार्षद मंडल और कर्मचारी गण हिंडोला बनाने की सुंदर सेवा करके भगवान श्री नरनारायणदेव को खुश किये। ठाकुरजी के पूजारी ब्रह्मचारी संत राम को भगवान को झूला झूलाकर दर्शन कराये। श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल ठाकुरजी समक्ष नंद संतो ने कीर्तन गाये थे।

हिंडोला में जिसे यजमान बनना हो । वे कोठार कार्यालय का सम्पर्क करे ।(कोठारी शा. नारायणमुनि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर का ५८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा यहाँ वडनगर मंदिर के स.गु. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी तथा कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकादासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से पौराणिक नगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज का ५८ वाँ वार्षिक पाटोत्सव जेठ वद-१२ ता. ३०-६-१९ को रविवार के दिन अ.नि. भावसार शांतिलाल नरोत्तमदास तथा अ.नि. भावसार प्रभावतीबहन शांतिलालकी याद में उनके सुपुत्र प.भ. विजयभाई, अ.सौ. माधुरीबेन विजयभाई भावसार चि. जीतकुमार आदि परिवार के तरफ से उल्लास पूर्वक मनाया गया था । पाटोत्सव के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी तथा कोठारी शास्त्री विश्वप्रकाशदासजी के वक्ता पद से हुई थी । सभी हरिभक्तो ने अलौकिक रसपान किये । संहिता पाठ के वक्ता पद मंदिर के पुरोहित शास्त्री जयेशभाई रतिलाल व्यास बैठे थे । जेठ वद-१२ के यजमान द्वारा महापूजा विधिकरने के बाद संतो ने ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक करके अन्नकूट रखा गया था । पूजारी स्वा. धर्मविहारीदासजीने आरती किये थे ।

इस अवसर पर अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजीने यजमानश्री और हरिभक्तो ने भगवान से जुडी बाते की इस सेवा के बदले में शुभेच्छा भेजे थे । वडनगर और बाहर गाँवो से आने वाले हरिभक्तोने दर्शनक रके महाप्रसाद लिये थे । गाँधीनगर मंदिर से आये महंत पू. स.गु. शा. पी.पी. स्वामीने सभी हरिभक्तो को प्रभु की सर्वोच्चता का वर्णन करके खुश किये । कांकरिया मंदिर के महंत पू. स्वा. धर्मस्वरुपदासजी, स्वा. माधवप्रसाददासजी (जमीयतपुरा) ईडर से आये स्वा. जयवल्लभदासजी आदि संत आये थे । ट्रस्टी प.भ. नविनचंद्र मणीलाल मोदीने आभार विधिपूरी किये थे । सभापति की सुंदर सेवा स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजीने किया था । मोदी वाडीलाल ने सुंदर प्रबंधकिये थे । (पूजारी स्वा. धर्मविहारीदास गुरु शा. नारायणवल्लभदासजी - वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर अयोध्या १०५ वाँ पाटोत्सव

सर्वोपरि सभी अवतारो के अवतार बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज के चरण कमल से अलौकिक तीर्थ भूमि सरयू नदी से शोभित अयोध्यापुरी श्री स्वामिनारायण मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का १०५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से एवम् प.पू. बड़े महाराजश्री तथा पू. लालजी महाराजश्री के कृपा से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी गुरु स्वामी जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा मार्गदर्शन से अ.नि. सांख्ययोगी नानबाई करशन वरसाणी (केरा-कच्छ) की तरफ से उनके शिष्य मंडल सां देवुबा तता सां. जसुबा आदि की और से अषाढ सुद-४ ता. ६-७-१९ शनिवार के दिन उल्लास पूर्वक मनाया गया । पाटोत्सव के उपलक्ष में ता. २-७-१९ से ६-७-१९ तक श्री घनश्याम बाल चरित्र पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) के वक्ता पद से हुई । इसके यजमान प.भ. करसनभाई मनजीभाई हिराणी ध.प. अमरबाई करशनभाई तथा सुत रवजीभाई, लालजीभाई, तथा प्रेमजीभाई आदि परिवारने सुंदर लाभ लिये थे । इस पाटोत्सव अवसर पर तीर्थो से आये संत आये थे । जिसमें स.गु. शा. स्वा. विवेकसागरदासजी लोग पाठ में बैठे थे । सि मंगल अवसर पर सर्वोपरि छपैयाधाम के महंत स.गु. ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी और यहाँ के मंदिर के महंत स.गु. स्वा. देवप्रसादसाजी ने कथा किये । इसके यजमानश्री करशनभाई तथा उनके पुत्रोने साफा बाँधकर स्मृति रुप भेट दिये थे । छपैया मंदिर के कोठारी ब्र. शा. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी (मेम्बरश्री) ये बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज द्वारा अयोध्या मंदिर में किये गये । लीला चरित्र का वर्णन किये थे । पाटोत्सव अवसर पर मूली श्री राधाकृष्णदेव के पूजारी जे.पी. स्वामी, पार्षद भरत भगत, वडनगर से पूजारी धर्मविहारी स्वामी, अहमदाबाद से विष्णु स्वामी, पार्षद बाबु भगत, हार्दिक भगत तथा प्रयागराज के मंदिर से संत आये थे । अयोध्या मंदिर के गौर संदेश तिवारीने अभिषेक पूजन विधिविधिवत कराये थे । रसोई की सेवा में पार्षद भूपत भगत, सुमित भगत, पूजारी तिवारी और हरगोवभगत आदि ने सुंदर सेवा किये थे । कच्छ केरा के सांख्ययोगी बहनोने प्रशंसनीय सेवा दी थी । (शा. स्वा. नारायणवल्लभदासजी महंतश्री - वडनगर मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर देवपुरा (बहनोका) ता. विरमगाम में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

सर्वोपरी सर्व अवतारो के अवतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृ-पा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद तथा अ.नि. स.गु. स्वामी हरिस्वरुपदासजी के शिष्य मंडल तथा देवपुरा गाँव की तरफ से नये (बहनो का) श्री स्वामिनारायण

मंदिर का मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव उल्लास से मनाया गया था।

इस अवसर पर त्रिदिनात्मक श्रीमद् भागवत कथा यज्ञ ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट, आदि उल्लास किया गया। ता. ११-५-२०१९ शनिवार को वैशाख सुद-७ ना प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलो द्वारा ठाकुरजीकी प्राण प्रतिष्ठा विधिवत रुप से पूर्ण हुआ । अन्त में समस्त सभा को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद प्रदान किये थे । (कोठारीश्री - देवपुरा मंदिर)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में गुरु पूर्णिमा महोत्सव

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली मंदिर के महंत स.गु. स्वामी श्री श्यामसुंदरदासजीकी प्रेरणा मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में अषाढ सुद-१५ गुरु पूर्णिा ता. १६-७-१९ के दिन स.गु. ब्रह्मानंद सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का चित्र का पूजन-अर्चन सभी संत-हरिभक्तोने किया था । साथ ही साथ स.गु. शा. स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी अपने सत्संग के गुरु प.पू. आचार्य महाराजश्री और धर्मकुल की महिमा का गुणगान किये । झालावाड भाल औह हालार प्रदेश के हरिभक्तो धर्मपूजन का अलौकिक लाभ लेकर धन्य हुए थे । इस अवसर पर कोठारी हरिकृष्ण स्वामी, कोठारी व्रज स्वामी, पार्षद भरत भगत आदि संत-पार्षद मंडलने सुंदर प्रबन्धकिये थे । (कोठारी स्वामी - मूली मंदिर)

विदेश सत्संग समाचार

आई.एस.एस.ओ. श्री स्वामिनारायण मंदिर हंसवील (अमेरिका) में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समस्त धर्मकुल की खुशी आशीर्वाद से अमेरिका हंसवील में निवास करते हुए हरिभक्तोने सत्संग करने के लिये सत्संग का केन्द्र नया आधुनिक सुविधावाला मंदिर का निर्माण किये है। ता. ३-७-१९ से ७-७-१९ तक मूर्ति प्रतिष्ठा का उत्सव उल्लास के साथ पूर्ण किया गया।

इस मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव में श्रीमद् भागवत पारायण, महाविष्णुयाग, पोथीयात्रा, महापूजा जैसे अनेक कार्यक्रम का अच्छा प्रबन्धकिया गया था।

उत्सव का मंगल प्रारम्भ दीप प्रागट्य और मंगल उद्बोधन से हुआ था। सर्व प्रथम इस महा भगीरथ सेवा यज्ञ में आर्थिक फंड के लिये प.पू. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-प्रेरणा से जेतलपुर धाम के पू. स.गु. महंत शास्त्री स्वामी श्री आत्मप्रकाशदासजी और जेतलपुरधाम के ठाकुरजी के पूजारी ब्र. शा. स्वामी पूर्णानंदजी वहाँ प्रत्यक्ष आकर हरिभक्तो को प्रेरणादेकर भगीरथ कार्य पूर्ण किये।

मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा के वक्ता पद पर पू. श्री योगेन्द्रभाई भट्ट व्यास आसन पर बैठकर हजारो हरिभक्तो को कथा का रसपान कराये थे । अपने आई.एस.एस.ओ. के सभी भक्त आये थे । मंदिर निर्माण से लेकर सेवा करने वाले सभी हरिभक्तो का सन्मान किया गया था । आई.एस.एस.ओ. के सभी संत आये थे । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगमन से समस्त सत्संगी अति आनंदित हुए थे। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नये मंदिर का सिंहासन में सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायण आदि देवोकी वेदोक्त विधिसे प्राण प्रतिष्ठा की गयी थी। प.पू. महाराजश्रीने पूरे सभा को आशीर्वाद प्रदान किये थे। यहाँ के सभी हरिभक्त और सेवा करते ब्र. स्वा. पवित्रानंदजी को हार पहनाकर सभी के सेवा की प्रशंसा की गयी थी।

मंदिर निर्माण का समस्त प्रबन्धजेतलपुर धाम के महंत स.गु. पू. शा. स्वा. आत्मप्रकाशदासजी और पू. शा. पी.पी. स्वामी की देखरेख में किया गया था।(ब्र. स्वा. पवित्रानंदजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन का ३२ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा, प.पू. बड़े महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से उसी प्रकार यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी नरनारायणदासजी के मार्गदर्शन से सभी हरिभक्तो के सहयोग से श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन में स्थित ठाकुरजी का ३२ वाँ पाटोत्सव विधिवत मनाया गया था। इस अवसर पर पंचदिनात्मक श्रीमद् भागवत कथा शा. विश्वविहारदासजी के वक्तापद से हुई थी । जिसके यजमान श्री रमेशभाई मारफतिया परिवार तथा सहयजमान रश्मिभाई पटेल परिवार था । पाटोत्सव के मुख्य यजमान श्री शैलेषभाई पटेल, श्री माणेकलाल पटेल, और श्री जसुभाई चौधरी थे। अपने आई.एस.एस.ओ. मंदिर से आये सभी संतो का आरती उतारी गयी। लोगोने सभा में आशीर्वाद प्रदान किया। यजमानो का सन्मान किया गया था। अन्नकूट का

दर्शन करके, प्रसाद लेकर भक्त लोग कृतज्ञ हुए ।(बलदेवभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से हमारे हिन्दु श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में शनिवार को शांय ५ से ७ के बीच महंत स्वामी और भरत भगत सबी हरिभक्त साथ मिलकर सत्संग सभा का आयोजन किये थे । सर्व प्रथम युवा भक्तोने कीर्तन करके सभी को खुश कर दिये । इसके बाद महंत स्वामीने कथा कही । सभी यजमानो का सत्कार करके ठाकुरजी की थाल-आरती नित्य-नियम और हनुमान चालिसा का पाठ किया गया था । प्रसाद लेकर हरिभक्त अपने घर गये ।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीप छपैयाधाम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर के महंत शा. स्वा. अभिषेकप्रसादासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर पारसीप में विकेन्ड के बीच शनिवार से ५ बजे रथयात्रा की भव्य झाँकी निकाली गयी थी । भगवान को रथ में बैठाकर धुन-भजन के साथ यजमान परिवार हरिभक्तो ने श्रीहरि को मंदिर में बिराजमान करके आरती किये थे । स्वामी में प्रसंगोचित कथा कहे थे । यजमान और हरिभक्तो का सन्मान करके जनमंगल पाठ थाल आरती प्रसाद ग्रहण करके लोग घर गये ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन (वडतालधाण) पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा धर्मकिशोर स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर एलनटाउन (वडतालधाम) का ४ था पाटोत्सव २३ से ३० जून तक मनाया गया था । इस अवसर पर पू. स्वामी श्री विष्णुप्राण ग्रन्थ की कथा की गयी थी । कथा से पूर्व पोथीयात्रा, धुन-कीर्तन के साथ निकली थी । महंत स्वामी ठाकरुजी का अभिषेक करके अन्नकूट आरती की गयी थी । सेवा करने वाले सभी यजमान और भगतो को सन्मानित किया गया था । हमारे आई.एस.एस.ओ. के मंदिर से आये संतोने सुंदर उद्बोधन किया था । अन्तमें सभीने ठाकुरजी की आरती करके धन्य हुए ।(प्रविण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन की रथयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने ह्यूस्टन टेक्सास श्री स्वामिनारायण मंदिर में अषाढ सुद-२ ता. २ जूलाई शामं को ५ से ९ बजे तक सुव्रत स्वामी और महेन्द्र भगत के सुंदर प्रबन्धसे रथयात्रा उत्सव मनाया गया था ।

युवा हरिभक्तोने सुंदर रथ में ठाकुरजी को विराजित करके मुख्य यजमान आसितभाई त्रिवेदी के साथ संत पार्षद मंडल रथयात्रा निकलने के पूर्व संतोने आरती किया । भजन-कीर्तन के साथ मंदिर से रथयात्रा अष्टलक्ष्मी मंदिर तक ले गये । वहाँ पर मर्यादा में रहकर भाई-बहनोने गरबा किया था । बाद में रथयात्रा निज मंदिर आई । महंत स्वामी रथयात्रा की सुंदर कथा कही । यजमानो का सन्मान करके ठाकुरजी को भोग लगाकर नित्य-नियम करके लोग अपने घर गये थे ।(प्रवीण शाह)

लेकलैन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर का १४ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर लेकलैन्ड का १४ वाँ पाटोत्स ५ जुलाई से ७ जुलाी के बीच मनाया गया था ।

इस अवसर पर महंत स्वामी द्वारा श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा पारायण का सभी भक्तोने लाभ उठाया था । योगी स्वामी (बोस्टन) ने सभा का सुंदर संचालन किये थे । ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक अन्नकूट आरती संतोने किया था । ऐसा करने वालो को सन्मान किया गया था । बच्चो द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया गाय था । आनेवाला १५ वाँ पाटोत्सव अधिक भव्यता से मनाने की जाहेरात की गयी । सभी भाईयो और बहनो ने अच्छी सेवा प्रदान की थी । अंत में सभी लोग महाप्रसाद लेकर अपने घर गये ।(रसिकभाई)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद(गुजरात)पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) पारसीप नी (अमेरिका) मंदिर में रथयात्रा दर्शन। (२) न्युयोर्क के राजमार्ग पर हमारे मंदिर द्वारा आयोजित रथयात्रा दर्शन। (३) न्यु राणीप मंदिर द्वारा आयोजित रथयात्रा तथा फागुन उत्सव। (४) अयोध्या मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी के सामने अन्नकूट का दर्शन। (५) महेसाना मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष हरिभक्तो द्वारा बनाये गये कलात्मक हिंडोला दर्शन। (६) गांधीनगर सेक्टर-२ मंदिर में आम्रोत्सव का दर्शन।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

3

(१) हन्सवील (अमेरिका) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा करते और अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री। (२) प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्यमें अमेरिका में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की २५ वी शिबिर की गई। उसमें कई इवेन्ट में पू. लालजी महारजश्री तथा युवक मंडल के सदस्य। (३) स्वयं का २२ वाँ जन्मोत्सव कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में केक काटकर मनाते प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ प.पू. श्रीराजा, पू. बिन्दुराजाश्री तथा सुव्रतकुमार और सौम्यकुमार।

केलन्डर - २०२०

कालुपुर मंदिर द्वारा श्री नरनारायण देव और बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराजका २०२० के आकर्षक केलन्डर प्रकाशित होने वाले है। आप मीनीमम २५० केलेन्डर में अपने वाणीज्यका विज्ञापन दे शक्ते है।
संपर्क :- अतुल पटेल ९८२४० ३३२७५ और कौशिकभाइः- ९६६२०३०८२९

Daily Darshan Whatsapp no. +91 9909 967104

www.swaminarayan.in info@swaminarayan.in

Follow Us @ nndkalupurmandir

Praful Kharsani